

31-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - मधुबन होलीएस्ट ऑफ दी होली बाप"

का घर है, यहाँ तुम किसी भी पतित को नहीं ला

सकते"



प्रश्नः- इस ईश्वरीय मिशन में जो पक्के निश्चय बुद्धि हैं उनकी निशानियां क्या होंगी?

उत्तरः- 1- वे स्तुति-निंदा... सबमें धीरज से काम लेंगे, 2. क्रोध नहीं करेंगे, 3. किसी को भी दैहिक दृष्टि से नहीं देखेंगे। आत्मा को ही देखेंगे, आत्मा होकर बात करेंगे, 4. स्त्री-पुरुष साथ में रहते कमल फूल समान रहेंगे, 5. किसी भी प्रकार की तमन्ना (इच्छा) नहीं रखेंगे।



Click

गीतः- जले न क्यों परवाना.....

जिसको पाने के लिए लोग
अपना गला भी उतार कर
रखने को तैयार हैं..



So, Value this Time



ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप

समझा रहे हैं अर्थात् भगवान पढ़ा रहे हैं रूहानी

स्टूडेन्ट को। उन स्कूलों में जो बच्चे पढ़ते हैं, उन्हें

Points: **ज्ञान**

योग

धारणा

सेवा

M.imp.

31-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

कोई सूहानी स्टूडेन्ट नहीं कहेंगे। वे तो हैं ही

आसुरी विकारी सम्प्रदाय के। **आगे** v/s **तुम भी** आसुरी

अथवा रावण सम्प्रदाय के थे। **अब** राम राज्य में

चलने के लिए **5 विकारों रूपी रावण पर जीत पाने**

का पुरुषार्थ कर रहे हो। यह जो नॉलेज प्राप्त नहीं

करते उन्हों को समझाना पड़ता है - **तुम रावण**

राज्य में हो। खुद समझते नहीं हैं। तुम अपने मित्र-

सम्बन्धियों आदि को कहते हो हम बेहद के बाप से

पढ़ते हैं तो ऐसे नहीं कि वह निश्चय करते हैं।

कितना भी बाप कहे या **भगवान कहे** तो भी निश्चय

नहीं करते। नये को तो यहाँ आने का हुक्म नहीं है।

बिगर चिट्ठी वा बिगर पूछे तो कोई आ भी नहीं

सकते। परन्तु कहाँ-कहाँ कोई आ जाते हैं, यह भी

कायदे का उल्लंघन है। **एक-एक का पूरा समाचार,**

नाम आदि लिख पूछना होता है। इनको भेज देवें?

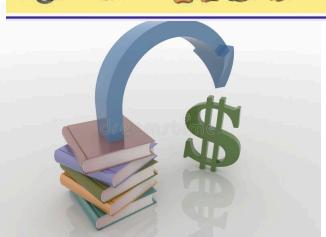
फिर बाबा कहते हैं भले भेज दो। अगर आसुरी

पतित दुनिया के स्टूडेण्ट होंगे तो बाप समझायेंगे,

वह पढ़ाई तो विकारी पतित पढ़ाते हैं। यह ईश्वर

पढ़ाते हैं। उस पढ़ाई से पाई-पैसे का दर्जा मिलता

है। भल कोई बहुत बड़ा इम्तहान पास करते हैं,





जागो जागो, समय पहचानो...

"बापदादा" मधुबन

31-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति

फिर कहाँ तक कमाते रहेंगे। **विनाश** तो सामने

खड़ा है। नेचुरल कैलेमिटीज भी सब आने वाली हैं।

यह भी तुम समझते हो, **जो** नहीं समझते हैं उन्हों को **बाहर विजिटिंग रूम** में बिठाए समझाना होता है।

यह है **ईश्वरीय पढ़ाई**, इसमें **निश्चयबुद्धि** ही

Definition

विजयन्ती होंगे अर्थात् **विश्व** पर राज्य करेंगे। रावण

सम्प्रदाय वाले तो यह जानते नहीं। **इसमें बड़ी**

No Admission Without permission

खबरदारी चाहिए। परमीशन बिगर कोई भी अन्दर

आ नहीं सकता। यह कोई घूमने-फिरने की जगह

नहीं है। **थोड़े** समय में कायदे कड़े हो जायेंगे

क्योंकि यह है होलीएस्ट ऑफ दी होली। **शिवबाबा**

को इन्द्र भी कहते हैं ना। यह इन्द्र सभा है। 9 रत्न

अंगूठी में भी पहनते हैं ना। उन रत्नों में **नीलम** भी

होता है, **पत्ता**, **माणिक** भी होता है। यह सब नाम

रखे हुए हैं। **परियों के भी नाम हैं ना।** **तुम परियाँ**

उड़ने वाली आत्मायें हो। **तुम्हारा ही वर्णन है।**

परन्तु मनुष्य इन बातों को **कुछ भी समझते नहीं**

हैं।



So, Be Prepared

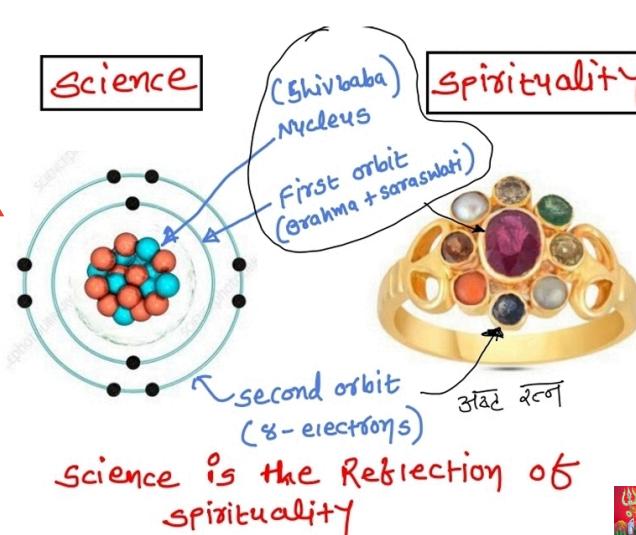


Alert..! All the time



feed
मैं कौन, मेरा कौन...!

Point



वा

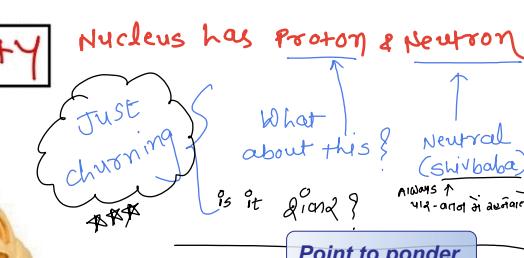
M. imp.

3



23/12/25

(शंकर) लेकिन शंकर को तो पार्वती का पति बताते हैं। पार्वती कोई काली नहीं है। बहुत हैं जो



Point to ponder

अंगूठी में भी रत्न जब डालते हैं, तो उनमें कोई पुखराज, नीलम, पेरूज़ भी होते हैं। कोई का दाम हज़ार रूपया तो कोई का दाम 10-20 रूपया।

बच्चों में भी नम्बरवार हैं। कोई तो पढ़कर मालिक बन जाते हैं। कोई फिर पढ़कर दास-दासियाँ बन जाते हैं। राजधानी स्थापन होती है ना। तो बाप बैठ पढ़ाते हैं। इन्द्र भी उनको ही कहा जाता है। यह ज्ञान वर्षा है। ज्ञान तो सिवाए बाप के कोई देन सके। तुम्हारी ऐसे ऑब्जेक्ट ही यह है। अगर निश्चय हो जाए कि ईश्वर पढ़ाते हैं फिर वह पढ़ाई को छोड़ेंगे नहीं। जो होंगे ही पत्थरबुद्धि, उनको कभी तीर नहीं लगेगा। आकर चलते-चलते फिर गिर पड़ते हैं। 5 विकार आधाकल्प के शत्रु हैं।

माया देह-अभिमान में लाकर थप्पड़ मार देती है फिर आश्वर्यवत् सुनन्ती, कथन्ती, भागन्ती हो जाते हैं। यह माया बड़ी दुश्तर है, एक ही थप्पड़ से गिरा देती है। समझते हैं हम कभी नहीं गिरेंगे फिर भी माया थप्पड़ लगा देती है। यहाँ स्त्री-पुरुष दोनों को पवित्र बनाया जाता है। सो तो ईश्वर के सिवाए कोई बना न सके। यह है ईश्वरीय मिशन।

Points: **ज्ञान** **योग** **धारणा** **सेवा** **M.imp.**



बाप को खिवैया भी कहा जाता है, तुम हो नईया।

खिवैया आते हैं, सभी की नईया को पार लगाने।

कहते भी हैं सच की नईया डोलेगी परन्तु झुबेगी नहीं। कितने ढेर के ढेर मठ पंथ हैं। ज्ञान और भक्ति की जैसे लड़ाई होती है। कभी भक्ति की भी विजय होगी, आखिर तो ज्ञान की ही विजय होगी।

भक्ति के तरफ देखो कितने बड़े-बड़े योद्धे हैं। ज्ञान मार्ग की तरफ भी कितने बड़े-बड़े योद्धे हैं। अर्जुन

भीम आदि नाम रखे हैं। यह तो सब कहानियाँ बैठ

बनाई हैं। गायन तो तुम्हारा ही है। हीरो-हीरोइन का पार्ट तुम्हारा अभी बज रहा है। इस समय ही युद्ध चलती है। तुम्हारे में भी बहुत हैं जो इन बातों को बिल्कुल समझते नहीं हैं। जो अच्छे-अच्छे होंगे उनको ही तीर लगेगा। थर्डक्लास तो बैठ न सकें।

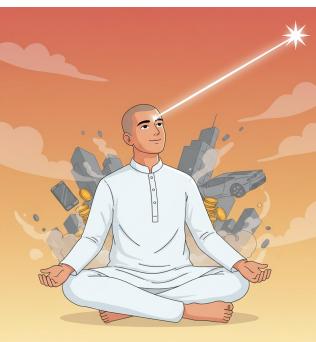
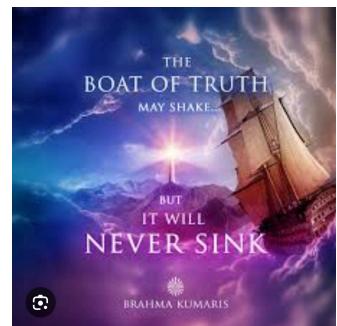
दिन-प्रतिदिन बहुत कड़े कायदे होते जायेंगे।

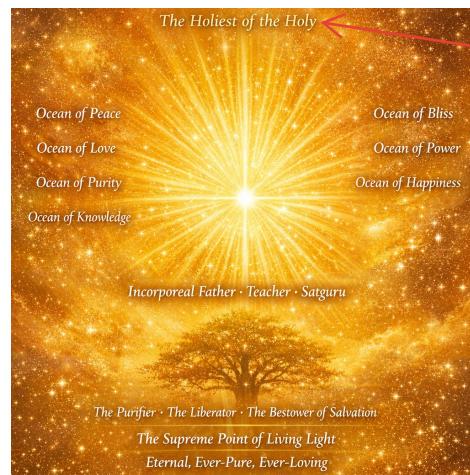
पत्थरबुद्धि जो कुछ नहीं समझते उनको तो यहाँ बैठना भी बेकायदे है।

"बाप को धर्मराज का साथ लेना पसन्द नहीं है। कर क्या नहीं सकता है! एक सेकेण्ड में किसी को भी अन्दर ही अन्दर सज्जा दे सकते हैं और वो सेकेण्ड की सज्जा बहुत-बहुत तेज़ होती है। लेकिन बापदादा नहीं चाहते।

बाप का रूप यारा है, धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।"

AV: 25/11/95





यह हाल होलीएस्ट ऑफ होली है। पोप को होली कहते हैं। यह तो बाप है होलीएस्ट ऑफ होली। बाप कहते हैं इन सभी का मुझे कल्याण करना है। यह सब विनाश हो जाने वाले हैं, यह भी कोई सब थोड़ेही समझते हैं। भल सुनते हैं परन्तु एक कान से सुन दूसरे कान से निकाल देते हैं। न कुछ धारण करते हैं, न कराते हैं। ऐसे गंगे-बहरे भी बहुत हैं। बाप कहते हैं हियर नो ईविल.... वह तो बन्दर का चित्र दिखाते हैं। परन्तु यह तो मनुष्य के लिए कहा जाता है। मनुष्य इस समय बन्दर से भी बदतर हैं। नारद की भी कहानी बैठ बनाई है। उनको बोला तुम अपनी शक्ति तो देखो - 5 विकार तो अन्दर में नहीं हैं? जैसे साक्षात्कार होता है। हनुमान का भी साक्षात्कार होता है ना। बाप कहते हैं कल्प-कल्प यह होता है। सतयुग में यह कुछ भी बातें होती नहीं। यह पुरानी दुनिया ही खत्म हो जायेगी। जो पक्के निश्चयबुद्धि हैं, वह समझते हैं कल्प पहले भी हमने यह राज्य किया था। बाप कहते हैं - बच्चे,

अब दैवी गुण धारण करो। कोई बेकायदे काम नहीं करो। स्तुति-निंदा सबमें धीरज धारण करना है। क्रोध नहीं होना चाहिए। तुम कितने ऊंच स्टूडेण्ट हो, भगवान बाप पढ़ाते हैं। वह डायरेक्ट पढ़ा रहे हैं फिर भी कितने बच्चे भूल जाते हैं क्योंकि साधारण तन है ना। बाप कहते हैं देहधारी को देखने से तुम इतना उठ नहीं सकेंगे। आत्मा को देखो। **आत्मा** यहाँ भ्रकुटी के बीच रहती है। आत्मा सुनकर कांध हिलाती है। हमेशा आत्मा से बात करो। तुम आत्मा इस शरीर रूपी तख्त पर बैठी हो। तुम तमोप्रधान थी अब सतोप्रधान बनो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने से देह का भान छूट जायेगा। आधाकल्प का देह-अभिमान रहा हुआ है। **इस समय** सब देह-अभिमानी हैं।

अब बाप कहते हैं देही-अभिमानी बनो। **आत्मा ही** सब कुछ धारण करती है। खाती-पीती सब कुछ आत्मा करती है। बाप को तो अभोक्ता कहा जाता है। **वह है निराकार**। यह शरीरधारी सब कुछ करते हैं। **वह खाता-पीता कुछ नहीं, अभोक्ता है।** तो

Points: **ज्ञान** **योग** **धारणा** **सेवा** **M.imp.**

31-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

इसकी फिर **वो लोग** कॉपी बैठ करते हैं। कितना मनुष्यों को ठगते हैं। **तुम्हारी बुद्धि** में अभी सारा ज्ञान है, **कल्प** पहले जिन्होंने समझा था वही समझेंगे। **बाप** कहते हैं मैं ही कल्प-कल्प आकर तुमको पढ़ाता हूँ और **साक्षी** हो देखता हूँ। **नम्बरवार** पुरुषार्थ अनुसार जो पढ़ा था वही पढ़ेंगे। टाइम लगता है। कहते हैं **कलियुग** अभी 40 हज़ार वर्ष शेष है। तो घोर अन्धियारे में हैं ना। इसके अज्ञान अंधियारा कहा जाता है। **भक्ति** मार्ग और ज्ञान मार्ग में **रात-दिन** का फ़र्क है। यह भी समझने की बातें हैं। बच्चे बड़ी खुशी में डूबे हुए रहने चाहिए। **सब कुछ है, कोई तमन्ना नहीं।** जानते हैं **कल्प** पहले मिसल हमारी सब कामनायें पूरी होती हैं **इसलिए** पेट भरा रहता है। **जिनको** ज्ञान नहीं, **उनका** थोड़ेही पेट भरा रहेगा। कहा जाता है - **खुशी जैसी खुराक नहीं।** **जन्म-जन्मान्तर** की **राजाई** मिलती है। **दास-दासी** बनने वालों को **इतनी खुशी नहीं रहेगी।** **पूरा महावीर** बनना है। **माया हिला न सके।**



Keywords: **ज्ञान** **योग**

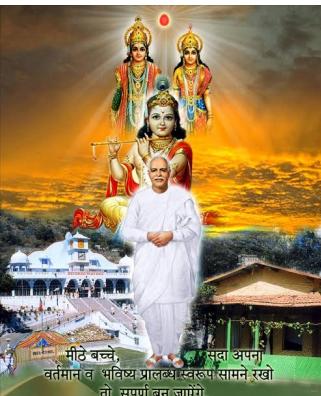




अध्याय 7 का श्लोक 03

मनुष्याणाम्, सहस्राणु, कश्चित्, यतति, सिद्धये,
यत्ताम्, अपि, सिद्धानाम्, कश्चित्, माम्, वेति, तत्त्वतः। ३।।।

अनुवाद:
(सहस्राणु) हन्तारो (मनुष्याणाम्) मनूष्यों में
(कश्चित्) कोई एक (सिद्धये) प्रभु प्राप्ति
के लिये (यतति) यत्करता है (यत्ताम्)
यत्करनेवाले (सिद्धानाम्) योग्य योर्मे
(अपि) भी (कश्चित्) कोई एक (माम्)
बुझ को (तत्त्वतः) तत्त्वसे अर्थत् यथार्थ
दृप से (वेति) जानता है। (३)



बाप कहते हैं आंखों की बड़ी सम्भाल रखनी है।
क्रिमिनल दृष्टि न जाए। स्त्री को देखने से
चलायमान हो जाते हैं। अरे तुम तो भाई-बहन,
कुमार-कुमारी हो ना। फिर कर्मन्द्रियाँ चंचलता क्यों
करती! बड़े-बड़े लखपति, करोड़पति को भी माया
खलास कर देती है। गरीबों को भी माया एकदम
मार डालती है। फिर कहते बाबा हमने धक्का
खाया। अरे १० वर्ष के बाद भी हार खा ली। अब
तो पाताल में गिर पड़े। अन्दर में समझते हैं इनकी
अवस्था कैसी है। कोई-कोई तो बड़ी अच्छी सर्विस
करते हैं। कन्याओं ने भी भीष्म पितामह आदि को
बाण मारे हैं ना। गीता में थोड़ा बहुत है। यह तो है
ही भगवानुवाच। अगर श्रीकृष्ण भगवान ने गीता
सुनाई तो फिर ऐसा क्यों कहते मैं जो हूँ जैसा हूँ
कोई विरला जानते। श्रीकृष्ण यहाँ होता तो पता
नहीं क्या कर देते। श्रीकृष्ण का शरीर तो होता ही
है सतयुग में। यह नहीं जानते कि श्रीकृष्ण के बहुत
जन्मों के अन्त के शरीर में मैं प्रवेश करता हूँ।
श्रीकृष्ण के आगे तो झट सब भाग आयें। पोप

31-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



आदि आते हैं तो कितना झुण्ड जाकर इकट्ठा होता है। मनुष्य यह थोड़ेही समझते कि इस समय सब पतित तमोप्रधान हैं। कहते भी हैं हे पतित-पावन आओ परन्तु समझते नहीं कि हम पतित हैं। बच्चों को बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। बाबा की बुद्धि तो सब सेन्टर्स के अनन्य बच्चों तरफ चली जाती है। जब जास्ती अनन्य बच्चे यहाँ आते हैं तो फिर यहाँ देखता हूँ नहीं तो बाहर में बच्चों को याद करना पड़ता है। उनके आगे ज्ञान डांस करता हूँ। मैजारिटी ज्ञानी तू आत्मा होते हैं तो मज़ा भी आता है। नहीं तो बच्चियों पर कितना अत्याचार होते हैं। कल्प-कल्प सहन करना पड़ता है। ज्ञान में आने से फिर भक्ति भी छूट जाती है। घर में समझो मन्दिर है, स्त्री-पुरुष दोनों भक्ति करते हैं, स्त्री को ज्ञान की चटक लग जाती है और भक्ति छोड़ देती तो कितना हंगामा हो जायेगा। विकार में भी न जाये, शास्त्र आदि भी न पढ़े तो झगड़ा होगा ना। इसमें विष्ण बहुत पड़ते हैं, और सतसंग में जाने के लिए रोकते नहीं हैं। यहाँ है पवित्रता की बात। पुरुष तो नहीं रह सकते तो जंगल में चले जाते, स्त्रियाँ कहाँ

Point to be Noted



Example



विष्ण बहुत पड़ते हैं, और सतसंग में जाने के लिए रोकते नहीं हैं। यहाँ है पवित्रता की बात। पुरुष तो नहीं रह सकते तो जंगल में चले जाते, स्त्रियाँ कहाँ



ज्ञान

योग

धारणा

सेवा

M.imp.



जग ने जिनको ठुकराया, पद दलित

किया भटकाया
तुमने उन्हीं के हाथों इस जग को स्वर्ग
को बनाया

ईश मिलन के प्यासों को बाबा तुम
खुद आन मिले
बाबा तेरी यादों के दीप हमेशा रहेंगे
जले...

Click

राजयोग से विश्व उद्घारक - विश्व माता



हृद से बाहर आ करके, वह जगदम्बा कहलाई।
लगे पूजने उसको सब ही, विश्व उद्घारक वह कहलाई।



30.10.2025

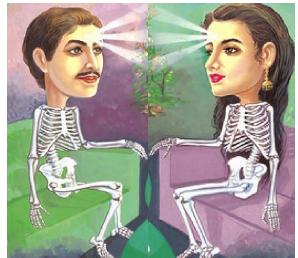


31-12-2025 मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
जायें। स्त्रियों के लिए वह समझते हैं नक्क का द्वार
है। बाप कहते हैं यह तो स्वर्ग का द्वार है। तुम

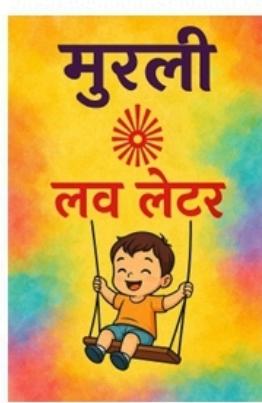
बच्चियाँ अभी स्वर्ग स्थापन करती हो। इनसे पहले
नक्क का द्वार थी। अभी स्वर्ग की स्थापना होती है।
सतयुग है स्वर्ग का द्वार, कलियुग है नक्क का द्वार।

यह समझ की बात है। तुम बच्चे भी नम्बरवार
पुरुषार्थ अनुसार समझते हो। भल पवित्र तो रहते
हैं। बाकी ज्ञान की धारणा नम्बरवार होती है। तुम
तो वहाँ से निकलकर यहाँ आकर बैठे हो, परन्तु
अब तो समझाया जाता है गृहस्थ व्यवहार में रहना
है। उन्हों को तकलीफ होती है। यहाँ रहने वालों के
लिए तो कोई तकलीफ नहीं है। तो बाप समझाते
हैं कमल फूल समान गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र
रहो। सो भी इस अन्तिम जन्म की बात है। गृहस्थ

व्यवहार में रहते हुए अपने को आत्मा समझो।
आत्मा ही सुनती है, आत्मा ही यह बनी है। आत्मा
ही जन्म-जन्मान्तर भिन्न-भिन्न ड्रेस पहनती आई
है। अब हम आत्माओं को वापिस जाना है। बाप
से योग लगाना है। मूल बात है यह। बाप कहते हैं
मैं आत्माओं से बात करता हूँ। आत्मा भ्रकुटी के



आत्मअभिमानी
स्थिति निर्लेप है।



बीच रहती है। इन आरगन्स द्वारा सुनती है। आत्मा
इनमें नहीं होती तो शरीर मुर्दा बन जाता। बाप
कितना वण्डरफुल ज्ञान आकर देते हैं। परमात्मा
बिगर तो यह बातें कोई समझा न सके। संन्यासी
आदि कोई आत्मा को थोड़ेही देखते हैं। वह तो
आत्मा को परमात्मा समझते हैं। दूसरा फिर कहते
आत्मा में लेप-छेप नहीं लगता है। शरीर को धोने
गंगा में जाते हैं। यह नहीं समझते आत्मा ही पतित
बनती है। आत्मा ही सब कुछ करती है। बाप
समझाते रहते हैं, यह मत समझो हम फलाना हूँ,
यह फलाना है...। नहीं, सब आत्मायें हैं। जाति-
पाति का कोई भेद नहीं रहना चाहिए। अपने को
आत्मा समझो। secular / धर्म निवृप्ते गवर्मेन्ट कोई धर्म को नहीं मानती।
यह सब धर्म तो देह के हैं। परन्तु सब आत्माओं
का बाप तो एक ही है। देखना भी आत्मा को है।
सभी आत्माओं का स्वधर्म शान्त है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता
बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी
बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

धारणा के लिए मुख्य सारः-



1) **जो बात काम की नहीं है, उसे एक कान से सुन दूसरे से निकाल देना है, हियर नो ईविल..... बाप जो शिक्षायें देता है उसे धारण करना है।**



2) **कोई भी हृद की तमन्नायें नहीं रखनी है। आंखों की बड़ी सम्भाल रखनी है। क्रिमिनल दृष्टि न जाए। कोई भी कर्मन्द्रिय चलायमान न हो। खुशी से भरपूर रहना है।**





वरदानः- माया के खेल को साक्षी होकर देखने

वाले सदा निर्भय, मायाजीत भव



समझा?

समय प्रति समय जैसे आप बच्चों की स्टेज आगे बढ़ती जा रही है, ऐसे अब माया का वार नहीं होना चाहिए, माया नमस्कार करने आये वार करने नहीं।



यदि माया आ भी जाए तो उसे खेल समझकर देखो। ऐसे अनुभव हो जैसे साक्षी होकर हृद का ड्रामा देखते हैं।



माया का कैसा भी विकराल रूप हो आप उसे खिलौना और खेल समझकर देखेंगे तो बहुत मजा आयेगा, फिर उससे डरेंगे वा घबरायेंगे नहीं।

जो बच्चे सदा खिलाड़ी बनकर साक्षी हो माया का खेल देखते हैं वह सदा निर्भय वा मायाजीत बन जाते हैं।



स्लोगनः- ऐसा स्नेह का सागर बनो जो क्रोध समीप भी न आ सके।

अव्यक्त इशारे -



अब सम्पन्न वा कर्मतीत बनने की धून लगाओ

Song at last pages

Definition of

कर्मतीत अर्थात् कर्म के अधीन नहीं, कर्मों के परतन्त्र नहीं। स्वतन्त्र हो कर्मन्दियों द्वारा कर्म कराओ।



e.g. ३१६॥ बिना

पुछो अपने आप से...

जो **गायन है कि** करते हुए अकर्ता, सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मतीत, क्या ऐसी स्टेज रहती है?



NO Attachment

AT ALL



कोई भी लगाव न हो और **सर्विस भी लगाव से न हो** लेकिन **निमित्त भाव से हो;** **इससे** **सहज ही कर्मतीत बन जायेंगे।**



m.m.m....imp.



40

साल का अन्त है ना। देखो, बापदादा मैजारिटी शब्द कह रहा है, सर्व नहीं कह रहा है, मैजारिटी कह रहा है। तो दूसरी बात क्या देखी? क्योंकि कारण को निवारण करेंगे तब नव-निर्माण होगा। तो दूसरा कारण - अलबेलापन भिन्न-भिन्न रूप में देखा। कोई कोई में बहोत रॉयल रूप का भी अलबेलापन देखा। एक शब्द अलबेलेपन का कारण - सब चलता है। क्योंकि साकार में तो हर एक के हर कर्म को कोई देख नहीं सकता, साकार ब्रह्मा भी साकार में नहीं देख सके लेकिन अब अव्यक्त रूप में। अगर चाहे तो किसी के भी हर कर्म को देख सकते हैं। जो गाया हुआ है कि परमात्मा की हजार आँखें हैं, लाखो आँखें हैं, लाखो कान हैं। वह अभी निराकार और अव्यक्त ब्रह्मा दोनों साथ-साथ देख सकते हैं। कितना भी कोई छिपाये, छिपाते भी रॉयल्टी से हैं, साधारण नहीं। तो अलबेलापन एक मोटा रूप है, एक महीन रूप है। शब्द दोनों में एक ही है, सब चलता है, देख लिया है क्या होता है! कुछ नहीं होता। अभी तो चला लो, फिर देखा जायेगा! यह अलबेलापन के संकल्प है। बापदादा चाहे तो सभी को सुना भी सकते हैं लेकिन आप लोग कहते



46

धर्मराज

हो ना कि थोड़ी तो लाज-पत रख दो। तो बापदादा भी लाज-पत रख देते हैं लेकिन यह अलबेलापन पुरुषार्थ को तीव्र नहीं बना सकता। पास विद आँनर नहीं बना सकता। जैसे स्वयं सोचते हैं ना सब चलता है। तो रिजल्ट में भी चल जायेंगे लेकिन उड़ेंगे नहीं। तो सुना क्या दो बातें देखी! परिवर्तन में किसी न किसी रूप में, हर एक में अलग-अलग रूप से अलबेलापन है। तो बापदादा उस समय मुस्कुराते हैं, बच्चे कहते हैं - देख लेंगे क्या होता है! तो बापदादा भी कहते हैं - देख लेना क्या होता है! तो आज यह क्यों सुना रहा है? क्योंकि चाहो या नहीं चाहो, जबरदस्ती भी आपको बनना तो है ही और आपको बनना तो पड़ेगा ही। तो थोड़ा सख्त सुना दिया है।

May I have your Attention Please..!

29/12/2025
(31-12-1999)



अमृतवेले प्रेरणाओं को कैच करना

Fitting Setting

10.1 ईश्वरीय मर्यादाओं की फिटिंग और सेटिंग :

आजकल बापदादा विशेष कार्यक्रम में बिज़ी रहते हैं। वह कौन-सा कार्य होगा ? कोई भी कार्य में बाप के साथ बच्चों का सम्बन्ध होगा ना ? तो अपने से सम्बन्धित कार्यक्रम को नहीं जानते हो ? अमृतवेले जब बाप से गुडमार्निंग व रुहरुहान करने आते हो, तो उस समय अनुभव नहीं करते हो या उस समय लेने में ही बिज़ी रहते हो ? क्या टच होता है ? वर्तमान समय समाप्ति का समय समीप आ रहा है, समाप्ति में लास्ट और फास्ट दोनों का प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार होता है। बापदादा हर रोज़ हरेक की सेटिंग और फिटिंग — ये दोनों ही बातें देखते हैं। कोई-कोई अपने आपको सेट करने की कोशिश भी करते हैं, लेकिन फिटिंग ठीक न होने के कारण सेटिंग भी नहीं होती। फिटिंग और सेटिंग को तो आप जानते हो ना ? ईश्वरीय मर्यादाओं में अपने आपको चलाना। यह ईश्वरीय मर्यादायें हैं फिटिंग। इन मर्यादाओं के आधार से स्थिति की सेटिंग होती है। बापदादा जब नम्बरवार महावीरों को देखते हैं व महारथियों के महारथी सेटिंग की फिटिंग करते हैं तो क्या देखते हैं ? कोई-न-कोई बात की व मर्यादा की फिटिंग न होने के कारण, सीट पर सेट नहीं हो सकते। अभी-अभी सीट पर हैं और अभी-अभी सीट के बजाय कोई-न-कोई साइट पर दिखाई पड़ते हैं। तो बापदादा इसी कार्य में बिज़ी रहते हैं। उम्मीदवार दिखायी बहुत देते हैं और लाइन भी बहुत बड़ी दिखायी देती है, लेकिन प्रमाण स्वरूप कोई-कोई होता है।

आज ये गीत समर्पित है - उस प्यारे शिव साजन को,
(आप चाहो तो सजनी भी बना सकते हैं।)
जिसमें बस उनको पाने की ही ख्वाहिश/धुन निहित हैं।

\$\$\$\$===\$\$
Song from movie: tum mile (2009)

Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun,
Tujhko Main Kar Loon Hasil Lagi Hai Yahi Dhun.

(ओ मेरे प्यारे बाबा,

आप मेरे दिल की धड़कनों को गौर से सुनो, जो की अब एक ही इबादत/
worship कर रहा हैं जिस में...

आप को पाने की अर्थात् आप समान बनने की, आप में समाने की या यूं कहो
कि आपकी श्रीमत पर चल, आपकी सर्व आशाओं को पूरा कर - आपको
हाँसिल करने की जैसे की एक धुन सी लगी हैं।

Zindgi Ki Shakh Se Loon Kuchh Hasin Pal me Chun

(इस हिरे तुल्य संगमयुग के सुहावने समय रूपी डाल से अब बाकी बचे जो
कुछ पल(पत्ते) हैं, उन लम्हों को तुम्हारी ही यादों से और तुम्हारे साथ से अपने
बना लूँ।)

Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

(तो बस, आपको हाँसिल करने की जैसे की एक धुन सी लगी हैं।)

Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun
Tujhko Main Kar Loon Hasil Lagi Hai Yahi Dhun
Zindgi Ki Shakh Se Loon Kuchh Hasin Pal me Chun
Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

Jo Bhi Jitne Pal Jeeyu
Unhe Tere Sang Jeeyu
Jo Bhi Kal Ho Ab Mera Use Tere Sang Jeeyu
Jo Bhi Saanse Main Bharoo Unhe Tere Sang Bharoo
Chahe Jo Ho Rasta Use Tere Sang Chalu

(ओ मेरे सच्चे साथी,
अब इस संगम के जितने कुछ पल बचे हैं, वो हर एक पल मैं तुम्हारे साथ ही
जीऊ,
आने वाला जो कल हैं उसे भी तुम्हारे साथ ही जीऊं,
इस शरीर की हर सांस जो चलती हैं वो सभी तुजसे combined रह कर ही
भरूँ,
एवं
चाहे जो भी, जैसा भी अति अति दुर्गम रास्ता ही क्यों न हो जिसपे चाहे
आग हो, शूल हो या फूल, in short कुछ भी....
बस...तुम्हारी श्रीमत पर तुम्हारे साथ ही चलूँ।)

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना
चाहिए कि क्या मैंने सर्व-सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई
रस रह गया है क्या कि जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध
से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का
अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो कोई मेल (male) की,
फीमेल (female) की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है
तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता? सजन व सजनी के रूप में भी बाप
से सजनी बन व सजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति
में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व-
सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि
चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और
स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्णु का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो
कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान् और कहाँ मैं, इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव
नर्कवासी विष्णु का कीड़ा ऐसे स्वयं का रूप सामने लाओ और तुलना करो कि कल
क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़
क्या ले रहा हूँ? गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व
धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल
जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बाप-दादा ठच कर सकता

A.V. 11/7/74

Link of
the Song
↓

[Click](#)

other songs
to submerge ↓ in baba's
love

[Click](#)

Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun
Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

#####

Mujhko De Tu Mit Jaane
Ab Khudse Dil Mil Jaane
Kyu Hai Yeh Itna Fasla....

(ओ मुज परवाने की समां...।

मुज परवाने को अब तुज पे मीट जाने की इज़ाज़त दे दो,
और तुम्हारे दिल से मेरे दिल को मिल जाने दो,
पता नहीं, क्यों अब तक भी इतना फांसला रहा हुआ है..?
क्योंकि तुम्हारे और मेरे बीच का ये फासला अब मुझसे सहन/बर्दास्त नहीं
होता हैं।)



Lamhe Yeh Phir Naa Aane
Inko Tu Naa De Jaane
Tu Mujh Pe Khudko De Loota.....

(इस संगम के अति अति अति अमूल्य पल फिर सारे कल्प में कभी नहीं आने
हैं, तो इन लम्हों को अब जाया/waste नहीं करने है।
तो अब इन फासलों को खत्म कर तुम अपने को मुज पर लूटा दो।)

Tujhe Tujhse Tod Loo Kahi Khudse Jod Loo
Mere Jism O Jaan Main Aa Teri Khusboo Odh Loo

(या फिर अब तो यही द्रढ़ संकल्प हैं की...

तुज को तुजसे ही तोड़ कर मुज से जोड़ दूँ अर्थात माया रावण को हरा कर,
तुम पर जीत पा लूँ,

एवं मुज आत्मा में अब तुम्हारे प्यार एवं combined रूप के साथ की -
खुशबु को सदा के लियें ओढ़ लूँ, जो किसी की संकल्प में भी हिम्मत न हो
तुम्हे मुझसे और मुजे तुमसे अलग करने की।)



Jo Bhi Saanse Main Bharoo Unhe Tere Sang Bharoo
Chahe Jo Hona Rasta Use Tere Sang Chalu
Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun
Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

#####

Bahoon Main De Bas Jaane
Sine Main De Chhup Jaane
Tujh Bin Main Jaaunga Kaha

(ओ मेरे प्यारे हमदम/हम सफर...,

तुम मुझे अपनी बाँहों में बस जाने/समा जाने की इज़ाज़त दो ,
या तुम्हारे दिलमें छुप जाने की (जैसे शिप में मोती) इज़ाज़त दे दो,
क्योंकि तुम्हारे अलावा अब मुझे इस जहान में कुछ दीखता ही नहीं।
तो तुम ही मुझे बताओ की अब मैं जाऊं तो जाऊं कहाँ...?)





Tujhse He Mujhe Ko Paane Yaado K Woh Nazrane
Ek Jinpe Haq Ho Bas Mera

(ओ मेरे सिकीलधे/Long lost and now found सच्चे साथी,

मुझे तुम्हारे साथ के अनुभवों की कुछ ऐसी तो सौगातें/ नज़राने प्राप्त करने हैं जिस पर सिर्फ और सिर्फ मेरा ही हक्क हो,

जिससे की मैं द्वापर से भक्तिमार्ग में, जब भी बिना पहचान के भी आपको याद करूँ तो आपके प्यार और आपके साथ की वही भासना मुझे मिले जो अभी इस समय संगम पर मुझे मिल रही हैं।)

Teri Yaado Main Rahoo

Tere Khwabo Main Jagoo

(मैं इतना तो तुम्हारी याद में खोया हुआ combined/submerge रहूँ की,

मेरे ख्वाबों की तो बात छोड़ो परंतु तुमको भी तुम्हारे ख्वाबोंमें अर्थात् हर एक संकल्पमें मैं ही मैं दिखाई दूँ,
in short, तुम भी मुझे याद किये बिना एक पल भी रह न सकों।)

Mujhe Doondhe Jab Koi
Teri Aankho Main Milu

(और जब मुझे कोई भी ढूँढते हुए पूछे की मैं कहाँ मिलूँगा?

तो वह बिन सोचे, एक ही उत्तर दे की ...

उस अल्हड़ का तो बस एक ही ठिकाना हैं,

और वो हैं शिव सागर/ शिवबाबा की याद या आंखें...)

Jo Bhi Saanse Main Bharoo

Unhe Tere Sang Bharoo

Chahe Jo ho Rasta Use Tere Sang Chalu

Dil Ibadat Kar Raha Hai

Dhadkane Meri Sun

Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

Mind very well...

जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो, वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरुषार्थ का चार्ट भी शुरू से रिवाइज़ करके देखो।

उसमें मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं। चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट्स में पास हो उसको देखो।

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं – ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा।

वैसे ही यहाँ चार सम्बन्ध भी हैं,

तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं – सत् बाप, सत् शिक्षक

और सदगुरु परन्तु

चौथा सम्बन्ध है साजन और सजनी का।

यह भी एक विशेष सम्बन्ध है-आत्मा-परमात्मा

का मिलन अर्थात् सगाई।

यह सम्बन्ध भी पुरुषार्थ को सहज कर देता है।

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वैसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं।

एक तो बाप के सम्बन्ध में-'फरमान वरदार', शिक्षक के सम्बन्ध में-'इर्मानिदार' और गुरु के सम्बन्ध में-'आज्ञाकारी' और साजन के सम्बन्ध में-'वफादार'

जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।